ॐ

श्री गणेशायनमः

* गायत्री-मन्त्र जपविधि *

संकलिता

पं० रामशरण ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक

पं० देवीदयाल ज्यो० एण्ड सनज़ (लाहौर वाले)

पंचांग दिवाकर कार्यालय माई हीरांगेट

जालन्धर शहर ।



प्रकाशक—

पं० देवीदयालु ज्योतिषी एण्ड सनज़ अध्यक्ष,

पंचांग दिवाकर कार्यालय माई हीरां गेट जालन्धर शहर।

मुद्रक—परशोत्तम प्रिंटिङ्ग प्रैस,

अड्डा टांडा जालन्धर शहर।

ॐ

श्री गणेशाय नमः

* गायत्री-मन्त्र जपविधि *

संकलिता
पं० रामशरण ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक
पं० देवीदयालु ज्यो० एण्ड सनज़ (लाहौर वाले)
पंचांग दिवाकर कार्यालय
माई हीरांगेट, जालन्धर शहर।

❀ श्री गायत्र्यै नमः ❀



प्रकाशकीय वक्तव्य

सांसारिक जीवन केवल सांसारिक सुखों को ही प्राप्त करना नहीं है। धन दौलत को एकत्रित करने में इस अमूल्य जीवन को नष्ट कर देना ही मनुष्य का कर्तव्य नहीं है। अपितु जीवन में उस धन को एकत्रित करना चाहिये जो शरीर छूटने पर भी साथ देवे, तभी जीवन की सफलता होती है।

ईश्वर ही इस मनुष्य के जीवन का एक सहारा है जो मन्त्र जाप से प्राप्त होता है। इन मन्त्रों में गायत्री मन्त्र का स्थान सब से ऊँचा हे। इसके प्रतिदिन जप करने से मानसिक शक्ति बढ़ती है, धन, स्वास्थ्य और सांसारिक सब कामनायें भी पूर्ण हो जाती हैं इस का जप करने वाला सांसारिक सुखों को भोग कर मोक्ष को प्राप्त करता है।

गायत्री जप से पिछले जन्मों में किये हुए पापों का नाश हो जाता है, और मानसिक शक्ति बढ़ने लगती है। हमारे भीतर जो जीवात्मा होता है वह सदा स्वच्छ और पवित्र रहता है। यह जीवात्मा दोषों से रहित और पवित्र है जिस तरह कि इस में गुण कर्म और स्वभाव भर दिया जाता है वह इसी प्रकार का दिखलाई देने लग जाता है। यह जीवात्मा चाहे किसी भी योनी में चला जावे सदा पवित्र रहता हैं। जैसे सूर्य के आगे बादल आ जाने से हम को उसका प्रकाश मन्द दृष्टिगोचर होने लगता है परन्तु उसका प्रभाव सूर्य पर कुछ भी नहीं पड़ता, ठीक उसी प्रकार ही इस जीवात्मा की दशा है, अच्छे और बुरेकर्मों का जाला सदा इसके चारों तरफ बना रहता है, परन्तु वह पवित्र ही रहती है। जप करने से जितने सात्विक अंश अन्दर बढ़ते जाते हैं इतने ही पापों का नाश होता चला जाता है। पिछले जन्मों में किये हुए कर्म, प्रारब्ध की आकृति धारण करते जाते हैं

उसका फल भी भोगना पड़ता है। जब पाप कर्मों को छोड़ दिया जावे तो तत् सम्बन्धी बुरे कर्मों का फल भी कम होता जाता है और हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ती जाती है आत्मा और परमात्मा का एक दूसरे से सम्बन्ध है, इस कारण जो शक्तियां ईश्वर में होती हैं वही शक्तियां आत्मा में भी होती हैं। परन्तु हमारे पिछले जन्मों में किये पापों के कारण हमें प्रतीत नहीं होती, जब तक हमारी आत्मा के आगे का जाला अर्थात् पापों का समूह साफ न हो जाए हम उनको कैसे प्राप्त कर सकते हैं। ज्यूं २ साधक का आत्मिक बल बढ़ता जावेगा उतनी ही ईश्वर की शक्तियां उसमें बढ़ती जावेंगी। गायत्री जप एक ऐसा साधन है जिस से आत्मिक शक्ति बढ़ कर परमेश्वर की ओर हम को ले जाती हैं। इस लिये प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि वह प्रतिदिन इस मन्त्र का अर्थ को ध्यान में रखते हुएजप करे और जीवन को सफल बनाए।

प्रकाशक

पं० रामशरण दास ज्योतिषाचार्य

पंचांग दिवाकर कर्ता

जालन्धर शहर

ॐ श्री गणेशायनमः ॥

अथ गायत्री जपविधि

गायत्री पुरश्चरण

मन्त्र फल सिद्धि को पुरश्चरण कहते हैं। प्रतिदिन तीन काल की पूजा नित्य जप, तर्पण, होम ब्राह्मण भोजन इत्यादि को पुरश्चरण कहते हैं।

पुरश्चरण करने के स्थान

पर्वत पर, नदी के तट पर, बिल्ववृक्ष के नीचे, जल के समीप, गोष्ठ स्थान (देवमन्दिर, पीपल) बागीचा में, तुलसी के समीप, पुण्यक्षेत्र में, गुरु स्थान और ऐसे स्थान पर जहां चित्त एकाग्र हो ऐसे स्थानों पर मन्त्र का पुरश्चरण करने पर शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

देह शुद्धि प्रकार

आत्मा को शोधन करने के लिये बुद्धिमान मनुष्य तीन लक्ष या आठ लक्ष जप करें। याज्ञवलक्य मत से २४ लक्ष जप करने से आत्मा की शुद्धि होती है। या तीर्थ स्थान। नदी के तट पर सर्व प्रायश्चित्त विधि से ६ साल, ३ साल वा १॥ डेढ़ साल यथाशक्ति चांद्रायणादि प्रायश्चित करके पुरश्चरण करे।

अथ अन्नशुद्धि प्रकार

बिना मांगा हुआ भिक्षा वृत्ति से रहित शुद्ध और पवित्र भोजन करे। अन्न के अनुसार ही कर्म और कर्मों के अनुसार ही बुद्धि होती है। किसी के घर का अन्न न खावे। शुद्ध पवित्र अन्न के चार भाग करे। एक भाग ब्राह्मण के लिये दूसरा भाग गोग्रास के

लिये, तीसरा भाग अतिथि के लिये और चौथा भाग स्वयं-भक्षण करे।

पुरश्चरण में वर्ज्य मास और तिथ्यादि

ज्येष्ट, आषाढ़, भाद्रों, पौष और मलमास तथा भौमवार और शनि वार व्यतिपात वैधृति, अष्टमी, नवमी, षष्ठी, चतुर्थी, त्रयोदशी, चतुर्दशी अमावस्या, प्रदोष काल तथा रात्रि, तथा मेष, कर्क, तुला, कुम्भ, मकर लग्न आदि में पुरश्चरण का आरम्भ न करे।

पुरश्चरण काल

वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक तथा फाल्गुन, मार्गशीर्ष में पुरश्चरण का आरम्भ करे। पूर्णिमा, द्वितीया, सप्तमी, त्रयोदशी, दशमी शुभवार, शुक्लपक्ष, गुरु शुक्र के उदयकाल में पुरश्चरण का आरम्भ करे

जप करने के स्थान

शिवालय, अग्नि, गुरु के समीप दीपक को प्रज्वलित करके जप करे। घर में जप करने से सम फल, गोशाला में शतगुणा फल होता है। नदी पर करने से सहस्रगुणा और शिवमन्दिर में करने से अनन्त फल प्राप्त होता है। समुद्र के तट पर, देवालय, पर्वत, पुण्य स्थान में कोटिगुणा फल होता है।

दीप स्थान

कुरुक्षेत्र, प्रयाग गंगासागर, काशी आदि स्थानों में कूर्म स्थान का विचार न करे।

आसन

काले रंग का आसन ज्ञान सिद्धि के लिये होता है। मोक्ष के लिये व्याघ्र चर्म का आसन, पौष्टिक के लिये कुशा, का,शान्ति के लिये विष्टर

का व्याधि नाश के लिये लकड़ी का, दुःख मोचन के लिये कंबल का आसन होना चाहिये। यदि कोई आसन न मिले तो कुशा का आसन या विष्ठर होना चाहिये।

जपमाला

मालाओं में सब से श्रेष्ठ माला सफेद रंग के रुद्राक्ष की माला अच्छी है मन्त्र उच्चारण मन में करे माला और मुद्रा गुरु को भी न दिखावे।

गायत्री मन्त्र की महिमा और उसका अर्थ

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

गायत्री मन्त्र के पहिले जो भूर्भुवः स्वः यह तीन व्याहृतियां हैं उनकी महिमा भी वेदों में कही गई हैं। छान्दोग्य उपनिषद् के चौथे अध्याय का प्रसंग है कि एकसमय प्रजापति लोगों में सार वस्तु जानने की इच्छा से अर्थात् संसार को वशीकरण करने के लिये तप करने लगे। तप करने से उन्होंने पृथ्वी में अग्नि देवता को, आकाश में वायु देवता को, और स्वर्ग में सूर्य देवता को सार देखा। देवताओं पर विजय पाने के उपरान्त द्वितीय बार तप करने से अग्नि में ऋग्वेद को, और वायु में यजुर्वेद को और सूर्य में सामवेद को सार देखा। फिर तप करने से वेदों का सार जानने के लिये ऋग्वेद में भूः को ययुर्वेद में भुवः को और सामवेद में स्वः को व्याहृती सार देखा। इस लिये यह महाव्याहृतियां लोकदेव और वेदों में सार तत्त्व वस्तु हैं।

भूः का अर्थ 'सत्' भुवः का अर्थ 'चित्त' और स्वः का अर्थ 'आनन्द' है। तीनों को मिलाकर सत्, चित्त, आनन्द सच्चिदानन्द ब्रह्म रूप ईश्वर हुआ। अर्थात् भूःशब्द सत् शब्द से सम्बन्ध रखता है और भुवः शब्द सब को प्रकाश करता है, इसके मूल कारण से चित्त रूप कहा जाता है।

स्वः का अर्थ सब को आनन्द देने वाला सुख रूप है इस लिये इस को स्वः कहा जाता है यह शंकर जी का कथन है यह सर्व व्यापक है। बड़े का नाम महान् है, जनः सब के कारण का नाम है। तपः सब तेजों का इकट्ठ का नाम तप है, और सत्य सब दुःखों से रहित को कहते हैं। गायत्री मन्त्र में आये हुए पदों का अर्थ 'तत्सवितुर' तत् शब्द का अर्थ ब्रह्म है और ओम् तत् सत् यह तीनों चिन्ह ब्रह्मा के तीन प्रकार के भेद बतलाते हैं उस से इस ब्रह्म, वेद और यज्ञ तीनों पहिले कह दिये गए हैं वैसे तो गीता में तत् शब्द से ब्रह्म का ही संकेत किया गया है, अर्थात् यज्ञदान तप इत्यादि के फल के मिलान को न करके तत् शब्द का अर्थ परमात्मा को मुख्य रखते हुवे मुक्ति चाहने वाले लोग कर्म करते हैं, इस लिए गीता भी तत् शब्द से परब्रह्म का ही वर्णन करती हैं, तत् शब्द से ज्ञात होता है कि तत् शब्द स्वयं ही ब्रह्म से सम्बन्ध रखता है सवितुर शब्द से भी ईश्वर का ही रूप दिया है। शङ्कराचार्य जी का कहना है कि सृष्टि का उत्पन्न करना और उसका पालना और उसका मारना यह सभी वस्तुयें सवितुर में हैं। वरेण्यं शब्द का अर्थ भी सब से उत्तम है, परमात्मा का ही रूप है और सब इस की उपासना करते हैं और इसके जानने की सब इच्छा करते हैं इस लिए सब से श्रेष्ठ है, वरेण्यं शब्द का अर्थ है कि जिस को सब चाहें और अत्यन्त सुख देने वाला है ऐसा श्री शङ्कराचार्य जी का कहना है। वरेण्यं इस गायत्री के प्रथम पाद से उत्पन्न होने वाले सृष्टि के करने वाले की शक्ति के ग्रहण करने योग्य ईश्वर के स्वरूप का सम्बन्ध है और कार्य्य कारण का अभेद होने से करने वाले की शक्ति का सम्पूर्ण कार्य्य में उसकी बुद्धि और शक्ति का पता चल जाता है। भर्गो देवस्य धीमहि इस द्वितीय पाद से शक्ति से युक्त भगवान् विष्णु का सम्बन्ध है। तेज वाचक जो भर्ग शब्द है उस से और ध्यान का अर्थ देनें वाला धीमहि शब्द से भगवान् विष्णु का

ही अर्थ देने वाला प्रतीत होता है और ध्यानखेंचने वाला अर्थात् प्रेरना करने वाला प्रचोद्यात् से प्रतीत होता है।

ॐ—उस ईश्वर का नाम है जिस ने कुल ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया है और सब की रक्षा करने वाला है सत्, चित्त, आनन्द का नाम ॐ है।

भूः--भूलोक (पृथ्वी) जो जगत् के जीने का कारण और प्राणोंसे प्यारा है उस ईश्वर का नाम भूः है।

भुवः—आकाश सब को प्रकाश करता है इस के मूल कारण से चित्त कहा जाता है जो मुक्ति की इच्छा रखने वालों और धर्मात्माओं को पापों से छुटकारा करके सब दुःखों से पृथक करके सदा सुख में रखता है। इस कारण परमेश्वर का नाम भुवः है।

स्वः—स्वर्गलोक (आनन्द) सब को आनन्द देने वाला है सुख स्वरूप है। सब जगत् में व्यापक होकर सब को नियम में रखता है इस लिये ईश्वर का नाम स्वः है।

तत्—तत् से तात्पर्य ईश्वर ब्रह्मस्वरूप है।

सवितुर-ईश्वर उत्पन्न करने वाला और ऐश्वर्य को देने वाला है।

वरेण्यं—पूजने योग्य, जो अत्यन्त ग्रहण करने योग्य है, जिसको सब चाहें जो सब प्रकार के आनन्द को देने वाला है।

भर्गो – पाप नाशक सम्पूर्ण दोषों से रहित आत्मिक ज्ञान स्वरूप।

देवस्य–ज्ञान स्वरूप जो सब की आत्माओं का प्रकाश करने वाला और सब सुखों का दाता है।

धीमहि–हम ध्यान करते हैं। हम सदा प्रेम भक्ति और निश्चय करके

अपनी आत्मा में धारण करें।

धियो—बुद्धि को।

यो—जो सविता देव, परमेश्वर है—नः—हमें।

प्रचोदयात्-प्रकाश करे सब बुरे कामों से पृथक् करे सदा उत्तम कामों में लगाए।

गायत्री का निर्णय ध्यान

कमलरूपी हृदय में यह दीप के सदृश वेद का सार स्थित है जिस का योगीलोग ध्यान करके प्राणायाम करते हैं, ईश्वर शिव सब भूतों प्राणियों में श्रेष्ठ मान्य हैं, वह भी अपने मन से मुक्ति के वास्ते ध्यान करते हैं यह गायत्री पुरश्चरण में भी लिखा है कि आत्मा से आकाश है और आकाश से वायु उत्पन्न हुई और वायु से अग्नि की उत्पत्ति हुई और अग्नि से ओंकार रूप हुआ और ओंकार रूप से व्याहृती ब्रह्माण्ड हुआ और व्याहृती से गायत्री की उत्पत्ति हुई और गायत्री सावित्री हुई और सावित्री से सरस्वती हुई और सरस्वती से वेदों की प्राप्ति हुई और वेदों से तीनों लोकों को उत्पत्ति हुई यह तीन लोक जो हैं इनका कर्म गायत्री हृदय में लिखा है। ध्यान करने वाले मनुष्य को चाहिये कि वह उलटे क्रम से लोकादि का लय अग्नि के समान ज्योतिस्वरूप अपने आत्मा में करे। सम्पूर्ण लोकों का वेदों में लय चिन्तन करे और वेदों का सरस्वती में, सरस्वती का सावित्री में, सावित्री का गायत्री में, और गायत्री का व्याहृति में और व्याहृति का ओंकार में, ओंकार का अग्नि में, और अग्नि का आकाश में, आकाश का लय ब्रह्मस्वरूप अपनी आत्मा में समझें, प्रदीप के समान स्वयं ज्योतिस्वरूप आत्मा से अतिरिक्त अन्य का चिन्तन न करे, केवल ब्रह्माण्ड में बसने वाले ईश्वर वाली आत्मा का ध्यान करे।

प्रार्थना वा ध्यान

प्रातः ध्यान—प्रातःकाल में गायत्री का कुमारी अवस्था और ऋग्वेद रूप में ब्रह्मा के रूप और हंस पर सवार हुई दो भुजाओं से शोभा देने वाली रक्त वर्ण के समान कमण्डुल हाथ में लिये हुवे और सूर्य मण्डल के रूप में ध्यान करना चाहिये।

यह प्रातः का ध्यान तीन मुख वाली करके करना चाहिये।

मध्यान्ह का ध्यान—मध्यान्ह के समय गायत्री युवा अवस्था वाली यजुर्वेद के समान विष्णुरूप वाली गरुड़ जी पर सवार हुई श्यामवर्णवाली तीन नेत्रों और चार भुजाओं से शंख, चक्र, गदापद्म धारण किये हुए और सूर्य मण्डल मध्यावस्था के रूप में ध्यान करना चाहिये यह मध्यान्ह का सावित्री का ध्यान है।

सायान्ह सन्ध्या ध्यान—सायान्ह काल में गायत्री वृद्ध अवस्था से सामवेद रूप में और रुद्र शिवरूप वृष अर्थात् बैल पर सवार हुए सफेद वर्ण से चार भुजाओं वाली, त्रिशूल और डमरू हाथ में लिए हुए और पात्र को हाथ में लिए हुए और सूर्य मण्डल के मध्यावस्था में रूप में ध्यान करे।

गायत्री मन्त्र में नाम

गायत्री मन्त्र में नौ नाम हैं १. ओं २. भूः ३. भुवः ४. स्वः ५. तत् ६. सवितुर् ७. वरेण्य ८. भर्गो ९. देवस्य इन नौ नामों में ईश्वर की स्तुति की गई है। धीमहि में भी ईश्वर की स्तुति की गई है, धियो यो नः प्रचोदयात् प्रार्थना की गई है। इसमें भी पांच भाग किए गए हैं। (१) ओं [२] भूर्भुवः स्वः [३] ततसवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्यधीमहि

[५] धियो यो न प्रचोदयात् । मन्त्र का जप करते समय ऊपर पांच भागों पर कुछ रुक रुक कर जप करना चाहिए ।

तीन प्रकार का गायत्री जप

ईश्वर के किसी नाम अथवा मन्त्र को बार बार पढ़ना जप कहलाता है। जप तीन प्रकार के होते हैं।

(१) जो ज़बान से किया जाता है ओष्ट भी हिलते हैं और शब्द भी सुनाई देता है।

[२] जिसमें ओंठ तो हिलते हैं परन्तु शब्द सुनाई नहीं देता।

[३] मानसिक, जिसमें न तो शब्द सुनाई देता है और न ही ओंठ हिलते हैं। इनमें मानसिक सब से उत्तम है।

जप करने वालें के ध्यान योग्य बातें

प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्रद्वय धारण कर सयज्ञोपवीत हो सूर्याभिमुख बैठ कर वैदिक सन्ध्या कर निम्नलिखित नियमानुसार जप करे।

१. आसन—मृगचर्म, व्याघ्रचर्म, कुशासन, कम्बल या रेशम का होना चाहिए। गुरुसे दीक्षित व्यक्ति ही कृष्णसार मृगचर्म पर बैठ सकता है।

२. बैठने का आसन—स्वस्तिकासन या पद्मासन हो।

३. माला—रुद्राक्ष, विद्रुम या कर माला के आधार पर जप हो।

४. जप करते समय किसी से बात नहीं करनी चाहिए। शरीर के किसी अङ्ग को हिलाना नही चाहिए। जप करते समय शिर नंगा होना चाहिए।

५. जप करते समय मन्त्र के अर्थ पर विचार करना, पवित्र एवं सन्तुष्ट रहना।

६. विधि यज्ञ से जप यज्ञ दस गुना विशेष है, उपांशु जप (जिह्वा तथा ओठों के केवल हिलने मात्र से जप करना) सौ गुना विशेष है। मानसिक जप हज़ार गुना विशिष्ट है।

७. माला के अग्रभाग [मेरु] का उल्लङ्घन नहीं करना चाहिए।

८. मन्त्र के आदि एवं अन्त में ॐ को अवश्य लगाना चाहिए। परन्तु ब्रह्मचारी एवं गृहस्थी केवल आदि में ही लगावें।

९. कम से कम १०८ बार जप अवश्य करना चाहिए। अधिक शक्ति अनुसार।

१०. आचमन—ब्रह्म तीर्थ से तीन बार आचमन करे।

११. जल प्रमाण-ब्राह्मण इतना जल पीवे जो छाती तक पहुंच सके, क्षत्रिय के गले तक, वैश्य के तालु तक, स्त्री एवं शूद्र एक बार मुख में जल डाले।

१२. आचमन मन्त्र-ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, या, ऋग्वेदाय स्वाहा, ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा, ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा, या, ॐ केशवाए नमः स्वाहा, ॐ माधवाय नमः स्वाहा, ॐ गोविन्दाय नमः स्वाहा, या, ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, ओं अमृतःपिधानमसि स्वाहा, ओं अमृतः यश श्रीमयी श्री श्रयतां स्वाहा।

विनियोगः—ओं कारस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता।

महाव्याहृतीनां प्रजापतिः ऋषिर्गात्र्युष्णिग नुष्टुभश्छन्दांसि, अग्निवाय्वादित्याः देवताः ।

गायत्र्याः विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता । सवितुः प्रीतये..............संख्या जपे विनियोगः ।

कर न्यासः–ओं भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ओं भुवः तर्जनीभ्यां नमः ।

ओं स्वः मध्यमाभ्यां नमः ।

ओं तत्सवितुरेर्ण्वयम् अनामिकाभ्यां नमः ।

ओं भर्गोदेवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ओं धियो यो नः प्रचोदयात् करतल पृष्ठाभ्यां नमः ।

अगंन्यासः–ओं भूः हृदयाय नमः, ओं भुवः शिरसे स्वाहा, ओं स्वः शिखायै वषट् । ओं तत्सवितुवरेण्यम् कवचाय हुम् । ओं भर्गोदेवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट् । ओं धियो यो नः प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

१. ओं श्वेतवर्ण समुदिष्ठ कौशेय वसना तथा,
श्वेतैर्विलेपनैपुष्पैरलङ्कारैश्च विभूषिता ।
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोक गताश्चवा,
अक्षसूत्रधरादेवि पद्मासन गता शुभा ॥ (निर्वाणतन्त्र)

२. या, ओं मुक्ताविद्रुमहेंमनील धवलच्छायैर्मुखैस्तीक्षणैः ।
मुक्तामिन्दु निवद्धरत्न मुकुटां तत्वार्थ वर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शूलं कपालं गुणम्,
शङ्ख चक्रमथारविन्दयुगलां हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥ (देवी भागवत्)

३. या, रक्त श्वेत हिरण्यनील,धवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां,
रक्तां रक्त नवस्त्रजां मणिगणैर्युक्तां कुमारिकाम् ।
गायत्रीं कमलासनां करतल व्यानद्ध कुण्डाम्बुजाम्,
पद्माक्षीं च वरस्त्रजं च दधतीं हसंधिरूपं भजे ॥ (द० भा०)

४. चतुर्भुजाँ शशिकलां जटाजूट समन्विताम्,
ऋक्सामयजुषां नाथां प्रफुल्लकमलेक्षणाम् ॥
पञ्चशद्वर्णग्रथितां मालाद्योतित हृत्स्थलाम्,
अनेकरत्ननिर्माण कण्ठदेशविराजिताम् ।
दिव्यगन्ध प्रलिप्ताङ्गी शुक्लवस्त्रपरिष्कृताम्,
शुक्ल पद्मासनासीनां शुक्ल वस्त्रोत्तरीयनीम् ।
ब्रम्हादिदेवता बृन्दैः सस्तुताँ नित्यनूतनाम् ॥ (गायत्री तन्त्र)

नोट–किसी एक श्लोक से ध्यान करना चाहिए ।

अथ कवचम्

ओं गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे ।
ब्रम्हसन्ध्या तु मे पश्चादुत्तरायां सरस्वती ॥१॥

पार्वती मे दिशं रक्षेत्पावकी जलशायिनी ।
यातुधानी दिशं रक्षेद्यातुधान भयङ्करी ॥२॥
पावनानीं दिश रक्षेत्पवमानविलासिनी ।
दिशं रौद्रीं च मे पातु रुद्राक्षी रुद्ररूपिणी ॥३॥
ऊर्ध्वं ब्रह्माणो मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ।
एवं दशदिशो रक्षेत्सर्वांगे भुवनेश्वरी ॥४॥
तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम् ।
वरेण्य कटिदेशे तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥५॥
देवस्य मेतद्धृदयं धीमहीति गल्लयोः ।
धियः पदं च मे नेत्रे यः पदं मे ललाटकम् ॥६॥
नः पातु मे पदं मूर्ध्नि शिखायां मे प्रचोदयात् ।
तत्पदं पातु मूर्धानं सकारः पातु भालकम् ॥७॥
चक्षुषी तु विकारार्णौं तुकारस्तु कपोलयोः ।
नासा पुटं वकारार्णौं रेकारस्तु मुखेतथा ॥८॥
णिकार उर्ध्वमोष्ठं तु भकारस्त्वधरोष्ठकम् ।
आस्यमध्ये भकारार्णौं गोकारश्चुबुके तथा ॥९॥
देकारः कण्ठ देशे तु वकारः स्कन्ध देशकम् ।
स्यकारो दक्षिणंहस्तं धीकारो वामहस्तकम् ॥१०॥
मकारो हृदय रक्षेद्धिकार उदरे तथा ।
धिकारो नाभिदेशे तु योकारस्तु कटिं तथा ॥११॥

गुह्यं रक्षतु योकार ऊरुद्वौ नः पदाक्षरम् ।
प्रकारो जानुनी रक्षेच्चोकारः जङ्घ देशकम् ॥१२
दकारः गुल्फदेशे तु भकारः पद युग्मकम् ।
तकारव्यंजन चैव सर्वांगे मे सदावतु ॥१३॥
इदं तु कवचं दिव्यं वाधाशतविनाशनम् ।
चतुःषष्टि कलाविद्या दायकं मोक्षकारकम् ॥१४॥
मुच्यते सर्व पापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति ।
पठनाच्छ्रवणाद्वापि गोसहस्र फलं लभेत् ॥१५॥
आवाहन—आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी ।
गायत्रीं छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधि कुरु ॥
माला पूजनम्—ओं महामाये महामाले सर्व शक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।
ओं ऐं श्रीं अक्षमालायै नमः ।
मन्त्रः—ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् ।
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
जप करने के पश्चात् गायत्री हृदय करे ।

"अथ गायत्रीहृदयम्"

नारद उवाच

भगवन्देव देवेश भूतभव्यय भवत्प्रभो ।
कवच च श्रुतं दिव्यं गायत्रीमन्त्र विग्रहम् ॥१॥

अधुना श्रोतुमिच्छामि गायत्री हृदयं परम् ।
यद्धरणाद्भवेत्पुण्यं गायत्रीजपोऽखिलम् ॥२॥

श्री नारायण उवाच

देव्याश्च हृदयं प्रोक्तम् नारदाथर्वणे स्फुटम् ।
तदेवाह प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम् ॥३॥
विराट् रूपां महादेवीं गायत्रीं वेद मातरम् ।
ध्यात्वा तस्यास्त्वथांगेषु ध्यायेदेताश्च देवताः ॥४॥
पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्याद्भावयेत्स्वतनौ तथा ।
देवी रूपे निजे देहे तन्मयत्वाय साधकः ॥५॥
नादेवोऽभ्यर्चयेद्देवमिति वेद विदो विदुः ।
ततोऽभेदाय काये स्वे भावयेद्देवताः इमाः ॥६॥
अथ तत्सप्रवक्ष्यामि तन्मयत्वमथो भवेत् ।
गायत्री हृदयस्यास्याऽथहमेव ऋषिः स्मृतः ॥७॥
गायत्रीछन्द उद्दिष्टं देवतापरमेश्वरी ॥
पूर्वोक्तेन प्रकारेण कुर्यादगांनि षट् क्रमात् ।
आसने विजने देशे ध्यायेदेकाग्र मानसः ॥८॥

अथार्थ न्यासःद्यौमूर्ध्नि दैवतम् । दन्तपक्तावश्विनौ ! उभे सन्ध्ये चोष्ठौ । मुखमग्निः । जिह्वा सरस्वती॥ ग्रीवायांतु बृहस्पतिः । स्तनयोर्वसवोऽष्ठौ । बाह्वोर्मरुतः । हृदये पर्जन्यः । आकाशमुदरम् । नाभावन्तरिक्षम् कटयोरिन्द्राग्नी । जघने विज्ञानघनः । प्रजापति ; कैलासमलये उरु

श्वेदेवा जान्वोः । जघायां कौशिकः । गुह्यमयने । उरु पितरं । पादौ
थवी । वनस्पतयोऽगु लिपु । ऋषयो रोमाणि । नखानि मुहूर्तानि । अस्थि
ग्रहाः । असृङ्गमां समृतवः । सम्वत्सरावैनिमिषम् । अहोरात्रावादित्य-
चन्द्रमाः । प्रवरां दिव्यां गायत्री सहस्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये । ओं तत्स
तुर्वरेण्याय नमः । ॐ तत्पूर्वाजयाय नमः । तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायै
मः । प्रातरधीयानो रात्रिकृतंपापं नाशयति । सायमधीयानो दिवस कृतं
पं नाशयति । सायंप्रातरधीयानो अपापो भवति । सर्वतीर्थेषु स्नातो
वति । सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति । अवाच्यवचनात्पूतो भवति । अभक्ष्य
क्षणात्पूतो भवति । अभोज्यभोजनात्पूतो भवति अचोष्यचोषणात्पूतो
वति । असाध्य साधनात्पूतो भवति । दुष्प्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतो
वति । सर्वप्रतिग्रहात्पूतो भवति । पंक्तिदूषणात्पूतो भवति । अनृत-
चनात्पूतो भवति । अथाऽब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति । अनेन हृदयेना-
धीतेनक्रतुसहस्रेणेष्टं भवति । षष्ठिशतसहस्रा गायत्र्या जपानि फलानि
वन्ति । अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयेत् । तस्य सिद्धिर्भवति । य इदं नित्य
धीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचि सर्वपापैः प्रमुच्यत इति । ब्रह्मलोके मही-
ते । इत्याह भगवान् श्री नारायणः ।

॥ इति हृदयम् ॥

जप करने के पश्चात् माला प्रार्थना करे—

माला प्रार्थना—ॐ त्व माले सर्व देवानां सर्वसिद्धि प्रदामता ॥
सके पश्चात् षडंग न्यास करे ।

षडंगन्यासः—ब्रह्मणे हृदयाय नमः । विष्णवे शिरसे स्वाहा ।
द्राय शिखायै वषट् । ईश्वराय कवचाय हुम् । सदा शिवाय नेत्र त्रयाय
षट् । सर्वात्मने अस्त्राय फट् ।

इस पश्चात् प्राणायाम कर जप निवेदन करे।

जप निवेदनम—अनेन-संख्या जपेन भगवान्स्वरुपी सविता प्रीयतां नमः।

उों गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्व गृहाणास्मत्कृतं जपम्।

सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्परमेश्वरी।

दश दिग्वन्दनम—उों प्राच्यै दिशेइन्द्राय नमः। आग्नेय्यांअग्नये नमः। दक्षिणस्यां यमाय नमः। नैऋत्यां निऋतये नमः। पश्चिमे वरुणाय नमः। वायव्यां वायवे नमः। उत्तरस्यां कुवेराय नमः। ईशान्यां ईश्वराय नमः। ऊर्ध्वायां ब्रह्मणे नमः। अधोदिशे अनन्ताय नमः। इस प्रकार प्रत्येक दिशा में दिशा देवता को नलस्कार करे।

देवता ब्राह्मण नमस्कारः—गोत्रोऽहं—प्रवरान्वितोऽहं शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनवाजसनेयी शाखाध्यायी—शर्मा (वर्मा-गुप्त) अहं भो बह्मरुपे गायत्री त्वामभिवादयामि। भो आचार्य त्वां अभिवादयामि। भो याज्ञवल्क्य त्वां अभिवादयामि। भो ईश्वर त्वां अभिवादयामि॥

सूर्याध्र्य दान—उों एहि सूर्य सहस्रांशां तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते।

सूर्य नमस्कारः—नमो विवस्वते बह्मण् भास्वते विष्णु तेजसे।
जगत्साबित्रे शुचये नमस्ते कर्म साक्षिणे।

प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि वा।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे!

गायत्री विसर्जनम—ओं देवा गातु विदो गातुं वित्वागातुमित ।
मनस्पत इम देवयज्ञ ँ- स्वाहा वातेधाः ।

——–

गायत्री पुरश्चरण विधि

ब्रह्म गायत्री मन्त्र चौबीस अक्षरों से बना है, इस कारण गायत्री का एक पुरश्चरण भी २४ लक्ष का रखा गया है।

शापोद्धार—अंग न्यास के बाद पूर्वोक्त रीति से संस्कार की हुई माला को पात्र में रख कर और प्रोक्षण करके "ओं महामाये महामाले सर्व शक्तिस्वरुपिणी। चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥" अर्थात् हे महामाये! सर्वशक्ति रूप मा।! धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तेरे ही अधीन हैं इस से तू मुझे सिद्धि की दाता हो इस मन्त्रसे प्रार्थनाकरे।

"ओं अविघ्नं कुरु मालेत्वम" इस मन्त्र से ग्रहण करके मन्त्र के देवमा सविता का ध्यान करता हुआ हृदय में माला को धारण करता हुआ और मन्त्र के अर्थ को स्मरण करता हुआ मध्याह्न तक जप करे अत्यन्त शीघ्रता में साढ़े तीन प्रहर तक जप करे। जप के अन्त में पुनः ओंकार का उच्चारण करके यह मन्त्र पढ़ कर "त्व माले सर्व देवानां प्रीतिदा शुभदा भव। शिवं कुरुष्व में भद्रे यशोवीर्य, च सर्वदा ॥" अर्थात् हे माले! तू सब देवताओं की प्रीति करता है तू मेरे शुभ की दाता हो। और हे भद्रे कल्याण, वीर्य्य, यश को कर। इस मन्त्र से माला को शिर पर रख कर तीन बार प्राणायाम करे, तीनों न्यासों को करके जप को ईश्वर के अर्पण करे! प्रतिदिन समान संख्या में जप ही करे, न्यून न करे।

अथ गायत्री पुरश्चरण प्रयोगः

देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण गायत्री पुरश्चरणेऽधिकार सिद्धयर्थं कृच्छ्रत्रयममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्ये, इति सङ्कल्प्य ।

होमादि प्रत्याम्नाय विधिना कृच्छ्राण्यनुष्ठाय, अमुक शर्मणो मम गायत्री पुरश्चरणेऽनेन कृच्छ्रत्रयानुष्ठानेनाऽधिकार सिद्धिरस्तु।इति विप्रा वन्देत् । विप्राःअधिकार सिद्धिरस्तु । इति ब्रुयुः । ततः करिष्यमाण पुरश्चरणाङ्गत्वेनविहित गायत्री जपादि करिष्ये ।इति सङ्कल्प्य स्वयं विप्र द्वारा वा कुर्यात् ।

तद्यथा—सप्रणव व्याहृति गायत्र्याः अयुतं जप्त्वा—गायत्री का दस सहस्र जप कर निम्नलिखित मन्त्रों को दश वार पढ़े ।

ओं आपो हिष्ठा मयो भुव—स्तान ऊर्जे दधातन ।
महेरणाय चक्षसे (ऋ० १०-९-१)

ओं योवः शिवतमो रस—स्तस्य भाजयतेहनः ।
उशतीरिव मातरः । (ऋ० १०-९-२)

ओं तस्मा अर गमाम वो यस्यक्षयाय जिन्वथ । आपो
जनयथाचनः । (ऋ० १०-९-३)

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभि-
स्त्रवन्तुनः ।

ओं ईशाना वार्याण्मं क्षयन्तीश्चर्षणीनाम् । अपो या चामि
भेषजम् ।

ओं अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निंच-
विश्वशंभुवम् ।

ओं आपः प्रवीत भेषजम् वरूथ तन्वे मम । ज्योक् च
सूर्यं दृशे ।

ओं इदमापः प्रवहत यत् किं च दुरितं मयि ।
यद्वाहमभि दुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम् ॥
ओं आपो अद्यान्वचारिष रसेन समगस्महि ।
पयस्वानग्ने आ गहि त मां संसृज वर्चसा ॥
ओं एतो न्विन्द्रं स्तवाम शान वस्वः स्वराजम् ।
न राधसा मर्धिषन्नः । ८. ८१. ४. ।
ओं एतोन्विन्द्र स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान् ममत्त ॥ ८. ९५. ७.
ओं एतो न्विन्द्र स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम् ।
कृष्णीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥ ८. २४. १९ ॥
ओं ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ १०. १९०. १
ओं समुद्रादर्णवा दधि सम्वत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ १०.१९०.२
ओं सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत ।
दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः ॥ १०. १९०. ३.

ओं कद्रुद्राय प्रचेतसे मीह्लुष्टमाय तव्यसे । वोचेम
शतम हृदे ॥ १. ४३. १

ओं स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय
पार्तवसुत: ९. १. १

ओं स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्ववेदा ।
स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमि स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।
१०. ८९. ६

ओं पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभि: सम्भृत रसम् ।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीर सर्पिर्मधूदकम् ॥ ९. ६७. ३२.

———

जप करने से पूर्व कुछ करने योग्य बातें ।

कूर्म चक्र:—जप करने के समय कूर्म चक्र के मुख में दीप रखवे से सिद्धि होती है ।

विधि:—चोकोर भूमि का मण्डल बना कर नौ कोनें बनावे, पूर्व आदि कोने में कवर्ग आदि वर्ग लिखे, आठवें ईशान कोन में ल क्ष लिखे, मध्य में दो दो स्वर क्रम से लिखे । जिस दिशा में स्थलाधिप, नगराधिप, के नाम का आदि अक्षर हो, वह चक्र का मुख जानना । यह कूर्म चक्र मन्त्र सिद्धि देने वाला है । कुरुक्षेत्र, प्रयाग, गङ्गासागर महाकाल तथा काशी में कूर्म चक्र का विचार नहीं होता ।

कूर्म चक्र चित्र

ल क्ष	क ख ग घ ङ			च छ ज झ ञ
	अं अः	अः आ	इ ई	
श ष स ह	ओ औ		उ ऊ	ट ठ ड ढ ण
	ए ऐ	लृ	ऋ ॠ	
य र ल व	प फ ब भ म			त थ द ध न

पूजन—स्नान कर आसन पर बैठ, आचमन, प्राणायाम कर गन्ध पुष्प लेकर अस्त्र मन्त्र (ओं हुं फट्) पढ़ कर सब द्वारों का शोधन करे। मन्त्र में देवी की कल्पना कर प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करे। तदनन्तर ध्यान, आवाहन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन

मधुपर्क, अभ्यङ्ग स्नान, लालरेशम, आभूषण, काले अगर का चन्दन, पर, केसर, कुन्द पुष्प, अगर चन्दन आदि और गन्ध युक्त धूप, दीप, नैवेद्य, चढ़ाकर अङ्ग पूजा तथा आवरण पूजा करे। देवी के पार्षद गणों का पञ्चोपचार पूजन करे।

१. गायत्री शापोद्धार–ब्रह्मशाप विमोचन मन्त्रस्य ब्रह्म ऋषि कमादुघा गायत्री छन्दः भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मानुगृहीता गायत्री शक्ति-र्देवता ब्रह्मशाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।

उँ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रम्हविदो विदुः।
तां पश्यन्ति धीराः सुमनसावाचमग्रतः।
भगवति त्व ब्रह्मशाप विमुक्ता भव।

२. विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्रस्य नूतन सृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिं वाग्दोहा गायत्री छन्दःविश्वामत्रानुगृहीता गायत्रो शक्ति-र्देवता विश्वामित्र शाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।

उँ गायत्री भजाम्यग्निमुखी विश्वगर्भा यदुद्भवाः।
देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टि तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये।
यन्मुखान्निसृतो बेदगर्भः। गायत्री त्वं विश्वामित्र-
शापाद्विमुक्ताभव।

३. अथ वसिष्ठ शापविमोचन मन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वशिष्ठऋपि विश्वोद्भवः गायत्री छन्दः वशिष्ठनुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वशिष्ठ शाप विमोचनार्थ जपे विनियोगः।

ओ सोहमर्कमयं ज्योतिरर्क ज्योतिरहं शिवः ।
आत्म ज्योतिरहं शुक्लः सर्व ज्योति रसोस्म्यहम् ।
अहोदेवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वती ।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोने नमोऽस्तुते ।
गायत्री देवि वशिष्ठ शापाद्विमुक्ता भव ।

अथ गायत्री अस्त्रोपाहरणम्

अस्य गायत्र्यस्त्रोपाहरण मन्त्रस्य ब्रह्म विष्णु महेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुसामानि छन्दांसि क्रियामय वपुः, परात्पर शक्तिर्देवता, हं बीजम् सूशक्ति सोऽहं कीलकम् अस्त्रोपाहरणे जपे विनियोगः ।

ओं ब्रह्मतेजो ज्वालामालिनीं देवी ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ओं विष्णु तेजो ज्वाला मालिनीं देवीं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ओं रुद्रतेजो ज्वालामालिनी देवी ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ।
ओं अग्नितेजो ज्वालामालिनीं देवीं ह्रैं अनामिकाभ्यांनमः ।
ओं ज्ञानतेजो ज्वालामालिनीं देवी ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ओं सत्यं तेजो ज्वालामालिनी देवी ह्रः करतलपृष्ठाभ्यां नमः ।
ओं बहुरुपिणि गायत्री दिव्ये सन्ध्ये सरस्वती ।
अजरे अमरे देवि ब्रह्मयोने नमोऽस्तुते ।

गायत्री मन्त्र के दस संस्कारः—जनन, दीपन, बोधन, ताड़न, अभिषेक, विमली करण, जीवन, तर्पण, गोपन और आप्यान, यह दस संस्कार शीघ्र एवं विशेष सिद्धि प्राप्त्यर्थ ही करने चाहिए ।

अथ गायत्री न्यासः

गायत्र्याः विश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। परमात्मदेवतायै नमः हृदये। ओं भूः नमः हृदये, ओं भुवः नमः मुखे। ओं स्वः नमः दक्षांसे। ओं महः नमः वामांसे। ओं जनः नमः दक्षिणोरौ। ओं तपः नमः वामोरौ। ओं सत्यं नमः जठरे। ओं तत् नमः गुल्फयोः। ओं सं नमः पादपार्श्वयो। ओं विं नमः जान्वोः। ओं तुं नमः पाद मुखयोः। वं नमः जंघयोः। रें नमः नाभौ। णीं नमः हृदये। मः नमः कण्ठे। भं नमः हस्तयोः। गों नमः मणिवन्धयोः। दें नमः कूर्पयोः। वं नमः वाहुमूलयोः। स्यं नमः आस्ये। धीं नमः नासापुटयोः। मं नमः कपोलयोः। हिं नमः नेत्रयोः। धिं नमः कर्णयोः। यों नमः भ्रूमध्ये। यों नमः मस्तके। नं नमः पश्चिमवक्त्रे। दः नमः पूर्ववक्त्रे। यात् नमः ऊर्ध्वं वक्त्रे।

पद न्यासः—ओं तत् नमः शिरसि। सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये। वरेण्य नमः नेत्रयोः। भर्गो नमः मुखे। देवस्य नमः जठरे। धीमहि नमः हृदये। धियः नमः नाभौ। यः नमः गुह्ये। नः नमः जान्वोः। प्रचोदयात् नमः पादयोः। आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् शिरसि।

पा न्यासः—ओं तत्सवितुर्वरेण्यम् नमः नाभ्यादि पाद पर्यन्तम्।
ओं भर्गोदेवस्य धीमहिनमः हृदयादिनाभ्यतम्।
ओं धियो योनः प्रचोदयात् मूर्धादिहृदयान्तम्॥
परो रजसे सावेदोम् इति मूर्ध्नि विन्ययस्यः।

खडगन्यासः—ओं ब्रह्मखे हृदयाय नमः। विष्णवे शिरसे स्वाहा रुद्राय शिखायै वषट्। ईश्वराय कवचाय हुम्। सदाशिवाय नेत्र त्रयाय

धौषट्। सर्वात्मने अस्त्राय फट्।

मातृका न्यासः–अं कं खं गं घं ङं आँ अगुंष्ठाभ्यां नमः।

इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा।

उ टं ठं डं ढं णं मध्यमाभ्यां वषट्।

एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां हुम्।

ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां वौष्ट्।

अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्ष अः करतल पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

अथ लयांग न्यासः–ओं अं आं इ ई उ ऊँ ऋं ॠं लृं लं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं बं शं षं सं हं लं क्षं ओं भूर्भुवः स्वः तत्स-वितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्; क्ष लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लृं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं। त् यादचोप्र नयो योधिहिमधी स्यव देर्गोभण्यं रेर्वतु वित्सत स्वः वःर्भ भूः ओं इति हृदयादि मुखान्तम्।

पाठन्यासः–ओं म मण्डूकाय नमः मूलाधारे। क कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने। म मूलप्रकृत्यै नमः नाभौ। आं आधार शक्त्यै नमः हृदये। क कूर्माय नमः। व वराहाय नमः। ध धरिण्यै नमः। स सुधा सिन्धवे नमः। र रत्नद्वीपाय नमः। म मणि मण्डपाय नमः। क कल्प वृक्षाय नमः। स्व स्वर्ण वेदिकायै नमः। र रत्न सिंहासनाय नमः दक्षांसे

ध धर्माय नमः दक्षिणांसे। ज्ञां ज्ञानाय नमः वामोरौ। वं वैराग्याय नमः दक्षोरौ। ऐं ऐश्वर्याय नमः मुखे। अ अधर्माय नमः वामपार्श्वे। अ अज्ञानाय नमः दक्षपार्श्वे। अ अवैराग्याय नमः नाभौ। अ अनन्ताय नमः उपर्य्युपरि विन्यसेत।

अ अम्बुजाय नमः। स संविन्यासाय नमः। स सर्वतत्त्वात्मकाय पद्माय नमः। प्र प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। बिं विकारमय केशरेभ्यो नमः। यं पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः। व द्वादश कलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः। व षोडस कलात्मने चन्द्र मण्डलाय नमः। सं सर्वात्मने नमः रं रजसे नमः। त तमसे नमः। आं आत्मने नमः। अ अन्तरात्मने नमः। प परमात्मने नमः, ह्रां दीप्तयै नमः। ह्रीं सूक्ष्मायै नमः। ह्रां विद्युतायै नमः। पीठमध्ये सर्वतो मुख्यै नमः। ब्रह्म विष्णु रुद्रांविकात्मकाय सौर पीठात्मने नमः।

न्यास कर गायत्री जप करे तत्पश्चात विसर्जनादि पूर्ववत् करे। गायत्री तर्पण करे!

गायत्री तर्पणम्

गायत्र्याः विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः गायत्री तर्पणे विनियोगः।

ओं भूः पुरुष ऋग्वेद तर्पयामि। भुवः पुरुषं यजुर्वेदं त०। स्वः पुरुष सामवेदम् त०। महः पुरुषं अथर्ववेदम् त०। जनः पुरुषं इतिहास पुराणं त०। तपः पुरुषं सर्वागम त०। सत्यं सप्तलोक त०। ओं भूर्भुवः स्वः पुरुषं मण्डलान्तर्गतं त०। भूः एकपदां गायत्री त०। भुवः द्विपदां गायत्री त०। स्वः त्रिपदां गायत्रीं तः। ओं भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्री

न० । औषध त० । गायत्री त० । सरस्वतीं त० । सावित्रीं त० । वेद
मातरम् त० । पृथिवीं त० । जयां त० । कौशिकीं तर्पयामि । सांकृति
त० । सर्वापराजतीं त० । सहस्रभूर्ति त० । अनन्त मूर्ति तर्पयामि ।
प्रत्येक वार तर्पण करते समय ॐ अवश्य उच्चारण करे ।

———

जप के अन्त में अष्टमुद्रा प्रदर्शन करना चाहिए । अष्टमुद्रा— सुरभि—ज्ञान, सिंह, योनि, कूर्म, पङ्कज, लिङ्ग, तथा निर्वाण यह आठ मुद्राएँ हैं ।

पुरश्चरण होम विधि

पुरश्चरण जप समाप्त होने पर होम इस प्रकार करे । "पुरश्चरण
सांगता सिद्ध्यर्थ होम विधिं करिष्ये" ऐसा सङ्कल्प करके अग्नि का
स्थापना करके सूर्यादि नवग्रहों की पूजा से लेकर कलश स्थापन के अन्त
में अन्वाधान करे । 'चक्षुषी आज्येन' इस आहुति के अन्त में ग्रह रूपी
देवताओं को अन्वाधान को आल आदि की समिध चरू और घी की
आहुतियां से करके प्रधान देवता सविता को चौबीस सहस्र तिल की
आहुतियों से, और तीस सहस्र पायस की आहुतियों से, अन्वाधान
करके शेष होम स्विष्टकृत् चरू, पायस, तिल इन के सङ्ग घी का पर्यग्नि-
करण आदि करे । फिर आज्य भाग आहुति के अन्त में यह हवन के
योग्य द्रव्य अन्वाधान में कहे हुए देवताओं के निमित्त हो यह मेरा नहीं
है, इस प्रकार यजमान त्याग को करे । होम करने में ओंकार सहित
व्याहृतियों से रहित अन्त में स्वाहा से युक्त गायत्री होती है ।

तीन दूर्वाओं की एक आहुति होती है, दूर्वा और समिधों का
दधि, मधु, घी से अंजन करे अर्थात् इन को लगा ले । स्विष्टकृत आदि
बलिदान के अन्त में "समुद्र ज्येष्ठा" मन्त्र से यजमान का अभिषेक

करे। और यथाशक्ति दक्षिणा दें। होम के अन्त में जल में सविता देवता की पूजा को करके होम संख्या के दशांश से गायत्री के अन्त में 'सवितार तर्प्यामि'. यह कह कर तर्पण करे, तर्पण के दशांश से गायत्री के अन्त में "आत्मानमभिषिंचामि नमः' इस मन्त्र से अपने मस्तक पर अभिषेक करे। होम, तर्पण, अभिषेक, इन में जो न हो सके उसके स्थान में दूना जप करे। अभिषेक की संख्या से दशांश वा अधिक ब्राह्मणों को भोजन कराके पुरश्चरणपूर्णमस्त्विति' 'पुरश्चरण पूर्ण हो' यह ब्राह्मणों से कहा कर ईश्वर के अर्पण करे। प्रतिदिन 'यज्जाग्रतो०" इस सङ्कल्प मन्त्र को तीन वार पढ़े। और कर्ता ब्राह्मणों के सङ्ग हविष्य भोजन करे, सत्यबोले, भूमि पर सोवे, और जहां पर गृहीत भूमि हो उन देशों में न जाय।

गायत्री स्तोत्रम् (देवी भागवते)

नारद उवाच

भक्तानुकम्पिन सर्वज्ञ हृदय पाप नाशनम्।
गायत्र्याः कथितं तस्माद् गायत्र्याः स्तोत्रमीरय ॥१॥

नारायण उवाच

आदिशक्ते जगन्मातर्भक्तानुग्रहकारिणी।
सर्वत्र व्यापिके अनन्ते श्री सन्ध्येनमोस्तुते ॥२॥
त्वमेव सन्ध्या गायत्री सावित्री च सरस्वती।
ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री रक्ता श्वेता सितेतरा ॥३॥

प्रातर्बाला च मध्यान्हे यौवनस्था भवेत पुनः ।
वृद्धा सायं भगवती चिन्त्यते मुनिभिः सदा ॥४॥
हंसस्था गरुड़ारूढ़ा तथा वृषभवाहिनी ।
ऋग्वेदाध्यायनी भूमौ दृश्यते या तपस्विभिः ॥५॥
यजुर्वेदं पठन्ती च अन्तरिक्षे विराजते ।
सामयापि सर्वेषु भ्राम्यमाणा तथा भुवि ॥६॥
रुद्रलोकं गता त्वं हि विष्णुलोकनिवासिनी ।
त्वमेव ब्रह्मणो लोकेऽमर्त्यानुग्रह कारिणी ॥७॥
सप्तर्षि प्रीति जननी माया बहु वर प्रदा ।
शिवयोः कर नेत्रोत्था ह्यश्रु स्वेद समुद्भवः ॥८॥
आनन्दजननी दुर्गा दशधा परिपठ्यते ।
वरेण्या वरदा चैव वरिष्ठा वरवर्णिनी ॥९॥
गरिष्ठा च वराहा च वरारोह छ सप्तमी ।
नीलगंगा तथा सन्ध्या सर्वदा भोग मोक्षदा ॥१०॥
भागीरथी मर्त्यलोके पाताले भोगवत्यपि ।
त्रिलोकवाहिनी देवि स्थानंत्रयनिवासिनी ॥११॥
भुर्लोकस्था त्वमेवासि धरित्रा लोक धारिणी ।
भुवोलोके वायुशक्तिः स्वर्लोके तेजसां निधिः ॥१२॥
महर्लोके महासिद्धिर्जनलोके जनेत्यपि ।
तपस्विनी तपोलोके सत्यलोके तु सत्यवाक् ॥१३॥

कमला विष्णुलोके च गायत्री ब्रह्मलोकगा ।
रुद्रलोके स्थिता गौरी हराधांगंनिवासिनी ॥१४॥
अहमोमहतश्चैव प्रकृतिस्त्व हि गीयते ।
साम्यावस्थात्मिका त्वं हि शवल ब्रह्मारूपिणी ॥१५॥
ततः परापरा शक्तिः परमा त्वंहि गीयसे ।
इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्ति त्रिशक्तिदा ॥१६॥
गंगा च यमुना चैव विपाशा च सरस्वती ।
शरयूः देविका सिन्धु नर्मदेरावती तथा ॥१७॥
गोदावरी शतद्रुश्च कावेरी देवलोकगा ।
कौशिकी चन्द्रभागा च वितस्ता च सरस्वती ॥१८॥
गण्डकी तपनी तोया गोमती वेत्रवत्यपि ।
इडा च पिंगला चैव सुषुम्णा च तृतीयका ॥१९॥
गान्धारी हस्तजिह्वाच पूषाऽपूषा तथैव च ।
अलम्बुषा कुहूश्चैव शाङ्खिनी प्राण वाहिनी ॥२०॥
नाडी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्रात्मनेर्बुधैः ।
हृत्पद्मस्था प्राणशक्ति कण्ठस्था स्वप्रतायिका ॥२१॥
तालुस्था त्वं सदाधारा विन्दुस्था विन्द्रुमालिनी ।
मूलं तु कुण्डली शक्ति कोपिनी केश मूलगा ॥२२॥
शिखामध्यासना त्वं हि शिखाग्रे तु मनोन्मनी ।
किमन्यद्वयदूनोक्तेन या किञ्चिन्नात् जगती त्रये ॥२३॥